United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)

An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal

ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-2,Issue-4 ,(November),2025

भगवान और भक्ति कुछ भक्तों के उदाहरण

BGN KAVITHA

Article Received:21-10-2025 Article Modified:22-11-2025
Article Accepted:25-11-2025 Article Published:29-11-2025
DOI:10.37854/UIJMR.2026.3.1.288

सारांश

यह लेख भगवान और भक्ति के स्वरूप तथा उनके आध्यात्मिक महत्व का विवेचन करता है। इसमें बताया गया है कि भगवान समस्त सृष्टि के आधार हैं और भक्ति उनके प्रति निष्काम प्रेम एवं पूर्ण समर्पण का मार्ग है। लेख में भक्ति के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि केवल बाह्य आडंबर नहीं, बल्कि निर्मल हृदय, सत्य, प्रेम और समत्व भाव ही सच्ची भक्ति के लक्षण हैं। अर्जुन, ध्रुव, गोपियाँ, प्रह्लाद, मीराबाई, सुदामा, शबरी तथा तुलसीदास जैसे महान भक्तों के जीवन प्रसंगों के माध्यम से भक्ति की महिमा को प्रस्तुत किया गया है। इन भक्तों ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास और प्रेम मनुष्य को आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करते हैं। लेख यह भी प्रतिपादित करता है कि भक्ति मनुष्य को सांसारिक बंधनों से मुक्त कर आत्मिक शांति और ईश्वर की कृपा प्राप्त करने का मार्ग दिखाती है। अंततः यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है कि सत्य, प्रेम, सेवा और समर्पण से युक्त जीवन ही भगवान की प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन है।

मुख्य शब्द**:**भगवान ,भक्ति ,ईश्वर-प्रेम,समर्पण ,आध्यात्मिकता

जिसके अन्तर्गत चौदह लोक है, जिसके आधीन मे सुख देने वाले बहुमूल्य वैभव है, यही नहीं उससे भी अधिक वंचनिय कैवल्य (जो कि नित्यानंद, नित्य, सत्य और नित्यज्ञान का झरना है) प्राप्त हो सेक वहीं भगवान है।

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-2,Issue-4 ,(November),2025

सब प्राणियों तथा वस्तुओं को सृष्टि में जीवित रखने का आधार केवल भगवान है। यह मौलिक सत्य भुला दिया गया है इसलिए जगत आज अकाल युद्ध तथा संघर्ष में फंसा हुआ है। हमें गहन निरीक्षण करना चाहिए, कि क्या हमारी प्रतिदिन की जरूरते आराम और सुख मनुष्य ने बनाये है या भगवान ने । जिस भूमि पर अन्न पैदा होता है उसे क्या मनुष्य ने बनाया है, क्या मनुष्य पानी बना सकता है? क्या वह वायु को नियत्रण मे रख सकता है? क्या वह लकडी बना सकता है ? जिसके अन्दर अग्नि निहित रहती है। इस सबका निर्माता भगवान ही है, मनुष्य में इनको बनाने की शक्ति नहीं है।

जव मनुष्य का मन जीवन के उतार और चढ़ाव, से परे (अनासक्त) रहता है एवं सभी परिस्थितियों में मन को शान्त रखने योग्य रहता है, तब वह शारीरिक अस्वस्थता में भी चिन्तामुक्त रह सकता है। मन का आकाश, आसमान के जैसे होना चाहिए। इसमें पक्षी, वायुयान बादल उडते हैं पूर किसी भी स्थान पर इनका निशान नहीं होता। बीमारी का कारण शरीर की बीमारी के की कमी बताते है। यह विटामिन मन की निराशा अधिक होती है। डॉक्टर विटामिन (G for God) की कमी है। इसका इलाज ईश्वर का नामस्मरण है। तन्मयता से ईश्वर का नामस्मरण एवं ईश्वर जो आशिर्वाद यह विटामिन G है यह दवा है, जो जीवन व आदतों को संयमित रखती है। यह स्वास्था को 2/3 भाग स्वस्थ 1/3 भाग है।

भक्ति :-

भगवा वस्त्र पहनना , धार्मिक अनुष्ठान आयोजित करना, यज्ञ करना, सिर मुंडना या जटाजूट धारणकरना, कमण्डल और दण्ड लेकर चलना आदि भक्ति नहीं है। निर्मल हृदय से ईश्वर का सतत चिंतन हर वस्तु को ईश्वर की सृष्टि मानते हुए सब में समत्व भाव रखना, विषय जगत के प्रति अनासक्ति । सबके प्रति समान प्रेम भाव, सत्य वाणी के प्रति वे दृढ़ता ये भक्ति के लक्षण है।

भगवान के प्रति परम प्रेम ही भक्ति है। प्रेम ईश्वर का भिन्न् स्वरूप है। प्रेम के द्वारा हम उस प्रेम-स्वरूप के समीप आते है। केवल सौहार्द और प्रेम की व्यापकता के द्वारा ही ईश्वर का अनुभव किया जा सकता है। भगवान के प्रति चिरकालिक प्रेम भक्ति है। भगवद् प्रेम से अधिक श्रेष्ठ मार्ग इस संसार में अन्य कोई नहीं है। है। भगवान के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण व गहन प्रेम के उत्कर्ष से भगवद - प्राप्ति के पश्चात् यह विश्वास अधिक दृढ़ता से प्रतिष्ठित होता है।

भक्त के मन और ध्यान को भौतिक वस्तुओं से हटाकर भगवान के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण द्वारा, अहं का विसर्जन और प्रमात्मा के साथ एकात्मकता भक्ति है। जैसा कि गीता में कहा गया है- 'न में भक्त : प्रणश्यति' अपने धर्म का परित्याग न करना, अपना जीवन भगवद-चरणों में समर्पित करना तथा धर्म परायण जीवन व्यतीते करना ही भक्ति है। प्रभु की महानता का चिन्तन व प्रार्थना और भगवद - प्रेम भक्ति है। मनुष्य का वास्तविक स्वरूप उसका शरीर, इन्द्रियों व मस्तिष्क नहीं है, अपितु 'सत', 'चित', 'आनंद' है । हम स्वयं के इस वास्तविक रूप को भुलते जा रहे हैं और क्षणिक भौतिक सुखों और दुःखों के दास बनते जा रहे है।

भक्ति चुम्बक के समान है। जब हृदय पवित्र रहता है और अपवित्रता का लेशमात्र भी नहीं रहता है और जब हम भगवान के आदर्शों का पालन करते हुए धारण करते हुए) पवित्र कार्यों का अभ्यास करते हैं तो चाहे हमारी क्षमता, शक्ति एवं सामर्थ्य जो भी हो, यह पवित्रता हमे भक्ति की ओर किसी भी सीमा तक ले जा सकती है।

वेद पुराण कहते हैं, कि जीवन लघु है अतः गीता तीन उपलब्धि की सरू सलाह मनुष्यों को देती हैं-

i).मानवरूप में जन्म लेना महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

ii) ईश्वर की उपस्थिति महसूस करना दूसरे सौभाग्य की बात है।

iii) सर्वोत्तम अवसर ईखर की उपस्थिति में सेवा में, लीन रहना है। ईश्वर के आदेशों का पालन करने में समय बिताना हैं।

भक्तों के उदाहरण:

1.अर्जुन :- महाभारत यह बताती है, ईश्वर के प्रथम स्थान देने का या नहीं देने का क्या परिणाम है? दोनों अर्जुन एवं दुर्योधन श्री कृष्ण के पास होनेवाले 'युद्ध में उनकी सहायता लेने के लिए गये ।

कृष्ण ने कहा, वे मुझे या मेरी सेना दो में से एक को चुन सकते हैं। अर्जुन ने कृष्ण को चुना एवं दुर्याधन से कृष्ण की सेना को चुना इससे यह बात स्पष्ट होती है कि पाण्डवों ने श्रीकृष्ण को प्रथम. स्थान दिया, इसका परिणाम यह हुआ, कि उनकी विजय हुई जबकि कौरव जिनका केवल सेना पर विश्वास था, वे सब कुछ खो दिये ।

2) ध्रुव :- ध्रुव ने आदर्श भक्त होते हुए एकाग्र भक्ति के द्वारा ईश्वर के साम्राज्य में शाखत अटलस्थान (कभी समाप्त न होनेवाला) प्राप्त किया ।

3)गोपियाँ :

i) गोपियों की तो सक्ति भक्तों की एक विशिष्ट श्रेणी है जिन में वे ही आती हैं। गोपियों भक्ति के उच्चतम शिखर पर पहुँच गयी थी। उन्हें तो कृष्ण चैतन्य के अतिरिक्त और कुछ का भान ही न था। उन्होंने शरीर और इन्द्रियों की चेतना का त्याग कर दिया था। वे तो शरीर में स्थित केवल मात्र कृष्ण तत्व से संयुक्त हो गयी थी।

ii) तुम कही भी जाओं ईश्वर की किसी भी रूप में पूजा करें। सभी रूप के ईश्वर है। जब तुम इस प्रकार के प्रेम का विकास करते हो और ईश्वर पर विश्वास रखते हो तो तुम उनको सब जगह देख सकते हो एवं उनके प्रेम को अनुभव कर सकते हो। प्रेम में विकास, बिना ईश्वर की अनुभूति असंभव है। यही कारण है, कि गोपियों कृष्ण को इस तरह प्रार्थना करती थीं –

ओ कृष्णा । तुम्हारी मधुर बंसी बजाते हुए, हमारे प्रेमरहित रेगिस्तानी हृदय में प्रेम के बीज उत्पन्न करो । प्रेम की वर्षा पृथ्वी पर इस तरह होने दो, कि नदियों में प्रेम का प्रवाह होने लगे । गोपियों ने कृष्ण के प्रेम को

प्राप्त किया था और इसके अलावा कुछ नहीं। तुम उस मधुर प्रेम की बूंद हो। बहुत सारी बूँदै झरना बन जाती है जो अन्ततः समुद्र में लीन होजाती है।

iii) वास्तव में गोपियों के प्रेम की तुलना नहीं है। जब कृष्ण ने वृन्दावन छोड दिया और मथुरा चले गये तो गोपिय की शारीरिक व मानसिक वेदना (कृष्ण विछोड का दुःख) अत्यंत महान थी। इसको जानने कृष्ण ने उद्धव को भेजा। जब गोपियों ने उद्धव को देखा उन्होंने उसे घेर लिया और पूछने लगी, हमारे कृष्ण कैसे है? हमारे कृष्ण कब आ रहे हैं ? गोपियों के हृदय प्रेम के उद्वेग से जल रहे थे। उनकी आँखों में आँसु थे और वे मौन थीं।

4) ज्ञानेश्वर (ज्ञानी । ज्ञान के धनी) - ज्ञानेश्वर ने रुढीवादी समाज से बहुत तकलीफ एवं अन्याय सहा था। उन्होने कहा था, सच्चा संत चन्द्रमा के जैसे होता है। चन्द्रमा घटेते या बढ़ते - दोनो समय शीतल प्रकाश देता है।

5) हरिश्चन्द्र (सत्य ईश्वर है। - हरिश्चन्द्र के जीवन से ज्ञात होता है, कि सत्य, तप से भी अधिक शक्तिशाली होता है।

6) कबीर (सभी ईश्वर की संतान है) - अलग-अलग जाति, वंश (संप्रदाय) एवं धार्मिक होते हुए भी सभी मनुष्य समान है।" इस प्रकार की शिक्षा के लिए कबीर को याद किया जाता है। इस ब्रह्माण्ड को बनाने वाला केवल एक है और सभी उसकी संतान हैं।

7) कर्ण :- अतीत में भारत में अनेक वीर पुरुष और नारियों ने जन्म लिया है, जिन्होने पिता, माता, पति, पत्नी तथा अपना सर्वस्व ईश्वर के लिए त्याग दिया था। कर्ण का उदाहरण लो। उसे सूर्य का आशीवदि प्राप्त था। जिस प्रकार रजा बलि ने अपने गुरु शुक्राचार्य की प्रार्थना के विरुद्ध वामन भगवान को दान देना उचित समझा, उसी प्रकार कर्ण ने भी सूर्य भगवान की चेतावनी की के विरुद्ध अपने कर्ण- आभूषण और कवच इन्द्र को दे दिए थे।"

8) मीराबाई (ईश्वर सबसे प्रिय हैं) - मीराबाई सवोच्च भक्ति का उदाहरण है। जिसमें पवित्र आत्मा ईश्वर को सबसे अधिक प्रिय होती है एवं ईश्वर भक्त का साथी' होता है।

9) प्रल्हाद (मन, वचन और कर्म की पवित्रता)- प्रल्हाद ईश्वर के महान भक्त थे। वह लगातार ईश्वर के नारायण नाम को भगवान नारायण का स्वरूप एवं ईश्वर समस्त ब्रह्मांड में विद्यमान है, ऐसा देखते थे। यह वास्तविकता है। भक्त प्रल्हाद बचपन से ही अपनी वाणी ईखर में पूर्णसमर्पित कर दी थी। प्रल्हाद की जिव्हा पर हमेशा नारायण का नाम होता था।

10) रामदास (धर्म रक्षा करता है) समर्थ रामदास ने शिवाजी महाराज के आध्यात्मिक गुरु थे। वह शिवांजी के वैराग्य से प्रभावित थे। स्वामी रामदास ने शिवाजी (राजा) को आशिवदि देते हुए आश्वस्त किया था, कि जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।

11) शकुबाई (ईश्वर के लिए अत्यंत प्रेम) - ईश्वर के प्रत्येक कार्य में कोई उचित कारण होता है। इसलिए तुम्हारा कर्तव्य ईश्वर की प्रार्थना करना और उनेक आर्शीवाद की प्राप्त करना है। शकुबाई का उदाहरण है। जब शकुबाई धार्मिक यात्रा में शामिल होने पंढरपुर जाना चाह रही थी। कृष्ण उसके इस यात्रा में जाने के लिए

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-2,Issue-4 ,(November),2025

स्वतंत्रत्तापूर्वक व्यवस्था कर सकते थे। परंतु उन्होने ऐसा नहीं किया। यदि वह पति की इच्छा के विरुद्ध जाती तो उसे बदनामी मिलती। इसके सद्व्यवहार की छवि को बरकरार रखने और उसके उदाहरण को विश्व के सम्मुख रखने के लिए कृष्ण ने शकुवाई का रूप धारण कर सास के द्वारा दिये गये समस्त प्रताडना को सहन किया था जबकी शकुवाई व पंढरपुर गयी थीं। कृष्ण ने ऐसा क्यों किया। ईखर किसी भी रूप को धारण करने के लिए तैयार रहते हैं और धर्म की रक्षा करने के लिए भक्त की किसी भी तकलीफ को स्वयं ले लेते हैं।

12) संत एकनाथ (दूसरों को दो और भूल जाओ) - महाराष्ट्र के संत एकनाथ जो, कि भगवान पर उनके शोध के लिए प्रसिद्ध है। उन्होंने जनार्दन को सभी प्राणियों में महसूस किया था।

13) शबरी (ईश्वर प्रेम है) - शबरी शास्त्र एवं पुराण नहीं जानती थी। उसकी साधना केवल राम नाम का जप था। जिससे उसके हृदय में इतनी गहरी भक्ति विकसित हुई, कि उसके जीवन का उद्देश्य केवल राम का दर्शन ही था। लक्ष्मण ने शबरी में महसूस किया, कि भगवान और उनके प्रिय भक्त एक हैं।

14) सुदामा (ईश्वर सब जानते हैं) - सुदामा ने महसूस किया,

कि संपत्ति ईश्वर के आशिर्वाद से आती है और जैसे ही व्यक्ति का जीवन धन आने से आराममय होता है, वह ईश्वर को भूल जाता है। परन्तु ईखर के पवित्र प्रेम का सुख यही जीवन में एवं इसके पश्चात भी वरदान रूप में प्राप्त होता है।

अपने को भगवान के किए अर्पण कर दो। सुदामा से भगवान नेपूछा, बोलो तुम तुम क्या चाहते है। ? उत्तर दिया, "मैं तो केवल तुम्हीं को चाहता हूँ क्यों कि उसी में सब कुछ समाया है।

15) सुखदेव (ब्रह्मचर्य ईश्वरीय मार्ग है) - सुखदेव ब्रह्मचर्य के सवेर्वोत्तम उदाहरण हैं।

16) तुलसीदास (त्याग ही योग है). सन्त ने सांसारिक इच्छाओं को कभी न खत्म होने वाली प्यास से तुलना की है। जब राम उनकी भक्ति से प्रसन्न हुए तब उन्होंने तुलसीदास के हृदय को पूर्ण आशीर्वाद से भर दिया। उन्होने ईश्वर के उस आशीर्वाद से जिज्ञासु आत्माओं के आनंद और सुख के लिए महान कार्य रामचरितमानस की रचना की।

निष्कर्ष :- निस्कर्ष में यह है कि सारा भ्रह्मांड भगवान के इशारे से चल रहा है मगर भक्तों के लिए भक्ति वह मार्ग है कि इस भ्रह्मांड के आधीन कार को (यानी भगवान को) अपने आधीन में रखने की शक्ति केवल भक्त को ही है।

अच्छो बनों, अच्छा करो, अच्छा देखे। यही भगवान की ओर जाने का मार्ग है।

Reference:

1) प्रेमवाहिनी By भगवान सत्यसाईबाबा कनविनर श्री सत्यसाई साधना ट्रस्ट प्रशांति निलयम, ए.पि.
2) मस्तिष्क, हृदय और हाथ कय आनन्द स्वरुप मैनी, U.P.

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-2,Issue-4 ,(November),2025

3) सनातन सारधि मासिक पत्रिका, ए.पि.
4) गीता वाहिनी भगवान सत्यसाईंबाबा द्वारा
5) सम्मर शवर्स इन वृंदावन, ए.पि.
6) श्री सत्यसाई सनातन संस्कृति, ए.पि.
7) भक्ति योग रत्नावली, श्री सत्य साई बुक्स एण्ड पब्लिकशन ट्रस्ट, मध्यप्रदेश